Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVII, Jan-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

जीवनीपरक उपन्यास और उनके लक्षण

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

जीवनीपरक उपन्यास और उनके लक्षण

Nirmala

Assistant Professor, Seth Navrang Ram Manohar Lohiya, Jay Ram Kanya Mahavidhyala, Lohar Majra, Kurukshetra

----------X----------

'उपन्यास' आधुनिक युग की देन है। कुछ विद्वानों के अनुसार उपन्यास का जन्म पूँजीवाद के उत्थान के साथ हुआ है। यही कारण है कि पूँजीवाद के उत्थान और पतन के साथ ही उपन्यास का स्वरूप भी परिवर्तित होता रहा है। विश्व साहित्य में सबसे प्रथम जो उपन्यास लिखे गये, वे समाज के एक ऐसे वर्ग के मनोरंजन के लिए लिखे गए थे, जिनके पास समय का आधिक्य था। मनोरंजन, कल्पना और वासना से पूर्ण इन उपन्यासों में रहस्य और रोमांचकारी दृश्यों का भी अभाव नहीं था। धीरे–धीरे इनमें मध्यवर्ग ने प्रवेश किया। औद्योगिकरण तथा शिक्षा के समुचित विकास के फलस्वरूप मध्यम वर्ग की जागृति तथा जीवन के प्रति उससे सहज जिज्ञासा भाव ने उपन्यास को एकदम नये और विशाल पाठक–वर्ग समक्ष खड़ा कर दिया। अब ते जो लेखक धन के लाभ में उच्च वर्ग के मनोरंजन के लिए कल्पित घटनाओं और चरित्रों का निर्माण करता था, वही लेखक अपने आसपास के जीवन को उपन्यास के सूत्र में पिरोने लगा। उपन्यासकारों के इसी दायित्व ने उपन्यास को जो प्रारम्भ में वस्तुवादी, स्थूल एवं मनोरंजनकारी या धीरे–धीरे आध्यात्मिकवादी सूक्ष्म एवं समाज–कल्याणकारी बना दिया है।

जीवनीपरक उपन्यास :

प्रारम्भकाल से आज तक उपन्यास ने जिन मंजिलों को पार किया, उनमें से 'जीवनीपरक' मंजिल भी एक है। उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर उपन्यासों को हम विभाजन कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में ऐतिहासिक उपन्यास, जासूसी उपन्यास आंचलिक उपन्यास आदि हैं। जीवनीपरक उपन्यास माने किसी महान व्यक्ति की जीवनी को मौलिक रूप में वर्णन करने वाला है। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि ऐतिहासिक उपन्यासों में किसी की जीवनी से संबंधित उपन्यास को सकता है। लेकिन जीवनी को कथावस्तु मानने वाले उपन्यास ही जीवनीपरक उपन्यास कहलाते हैं। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि उसके पात्र ऐतिहासिक होते हैं, कल्पित नहीं। ऐतिहासिक पात्रों और औपन्यासिक पात्रों में बहुत भेद होता है। इतिहास में पात्र लेखक की सृष्टि नहीं है। परन्तु उपन्यासों में सभी पात्र लेखक की उपज हैं। इतिहास के एक ही पात्र उपन्यासों में भिन्न–भिन्न रूपों में दिखते हैं। इतिहास के लिये गये पात्रों में ऐतिहासिक तत्त्व होते हैं और समाज में लिये गये पात्रों में सामाजिक तत्त्व होते हैं। शेष जो भाग बचता है, वह कल्पना–जन्य होता है। वह उपन्यास को इतिहास बनने से बचाता है। इतिहास के महान व्यक्ति माने साहित्यकार, दार्शनिक, वैज्ञानिक या राजनीतिक भी हो सकते हैं। युगीन उपन्यास, जिसमें साधारणतः पात्र सजीव मनुष्य होने के बदले युग–विशेष के व्याख्यात्मक उदाहरण मात्र बन जाते हैं। दूसरी श्रेणी में ऐतिहासिक आख्यान परिगणनीय है, जिसमें वर्तमान की एकरूपता और जटिलता से पलायन कर सुदूर अतीत के राजाओं को इतिहास प्रसिद्ध कार्य हैं। तीसरी श्रेणी में ऐतिहासिक उपन्यास आता है। इस प्रकार ऐतिहासिक और जीवनीपरक उपन्यासों में अंतर है।

जीवनीपरक उपन्यासों के लक्षण :

जीवनीपरक उपन्यास जीवनी और उपन्यास के मध्य की इकाई है। यथार्थ और कल्पना का भी यही सामंजस्य होता है। जीवनी तथ्यात्मक होती है तो उपनयास मुख्यतः कल्पनात्मक परन्तु जीवनीपरक उपन्यास कल्पना और तथ्य दोनों के दाव हो सकते हैं। जीवनीपरक उपन्यास इतिहास और साहित्य का मध्यवर्ती होता है, जिसका लेखक इतिहासकार की अपेक्षा अधिक स्वच्छंद किन्तु उपन्यासकार की तुलना में कम उन्मुक्त होता है। वस्तुतः जीवनीपरक उपन्यासकार वस्तु सत्य एवं भाव सत्य के बीच संतुलन स्थापित करता है। वस्तुतः जीवनीपरक उपन्यास, इतिहास, जीवनी और उपन्यास का एक महान रूपाकार है। जीवनीपरक उपन्यासों के मूल तत्त्व कुछ इस प्रकार हैं –

1. कथानक :

जीवनीपरक उपन्यास में कथानक–तत्त्व की प्रधानता अधिकांश विद्वान मानते हैं। यह उपन्यास का मूलतत्त्व है। कथानकत्व ही वस्तु होती है। जिस पर उपन्यास का भवन खड़ा होता है। कथानक को ऐतिहासिक घटनाओं का लेखा भी कहा जा सकता है। कथानक की पूर्णता उसके कथाकृति में उपस्थित किये गये रूप पर निर्भर होती है, जिसके निर्माण के लिए उसका सुगठित होना पहली आवश्यक शर्त है। यदि उसके पारस्परिक सम्बद्धता का अभाव अर्थात् ऐतिहासिक और जीवनीपरक घटनाओं का अभाव होता है तो कथा–शृंखला टूट जाती है। घटनाक्रम के निर्धारण में विवेक से काम लेता है। किसी भी उपन्यासकार की प्रतिभा का परिचय मौलिकता से होता है। मौलिकता से उपन्यास का महत्त्व बढ़ जाता है। ऐतिहासिक घटना का सीधा–सादा वर्णन या चित्रण कर देना एक बात है तथा उसमें कलात्मकता का समावेश करके उसमें निर्माण–कुशलता का परिचय देना दूसरी बात है। वह कभी–कभी कल्पना को भी आधार बनाकर कथानक को आगे बढ़ाता है। वह काल्पनिकता, वास्तविकता की छाया और सम्भावनाओं का प्रतिरूप बनकर उभरती जान पड़ती है। काल्पनिक घटनाएँ उपन्यास की यथार्थ घटनाओं की पूरक होती है। उपन्यासकार का यही उद्देश्य होता है कि वह पाठकों के सामने यथार्थ जीवन के ऐसे रूप को चित्रित कर सके, जिसमें उन्हें जीवन रूप की झांकी दिखाई दे। परन्तु मात्र कल्पना की सहायता से बड़े कथानक का ताना–बाना बुनना कोई अर्थ नहीं रखता। तब ही उपन्यास रोचक बनता है। रोचकता कथानक के अभाव में, उपन्यास

www.ignited.in

पाठकों का मनोरंजन नहीं कर सकता। कथानक के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक रोचकता रखना बहुत समर्थ उपन्यासकारों के लिए सम्भव होता है। इस प्रकार कथानक को जीवनीपरक उपन्यास में वर्णनात्मक और पात्रात्मक शैली में प्रस्तुत किया जा सकता है।

2. पात्र या चरित्र–चित्रण :

एक श्रेष्ठ उपन्यासकार यह दिखाने का प्रयत्न करता है कि मानव–चरित्र की वे कौन–कौन सी विशेषताएँ हैं, जिनके आधार पर किसी मनुष्य की मनुष्यता को देखा–परखा जा सकता है। खासकर जीवनीपरक, ऐतिहासिक उपन्यासों में मनुष्य का व्यक्तित्व उसके चरित्र का सबसे उल्लेखनीय अंग समझा जाता है। यदि किसी उपन्यास के पात्रों में सजीवता या सशक्तता होती है, तो वे पाठक के हृदय पर भारी प्रभाव डालते हैं। ऐतिहासिक पात्रों का चरित्र–चित्रण बहुत ही सचेत होकर करना है। कल्पना के आधार पर भी पात्रों का सृजन होता, जो कथानक के आगे बढ़ाने में लाभदायक होता है।

उपन्यासकार का पात्रोचित वर्णन करना प्रथम कर्त्तव्य है। हर एक पात्र की अपनी एक विशेषता होती है। इसे अभिव्यक्त करना भी उपन्यासकार का काम है। चरित्र–चित्रण विश्लेषणात्मक प्रणाली में या अभिनयात्मक विधि में होती है। ऐतिहासिक उपन्यासों में साधारणतः अभिनयात्मक विधि का प्रयोग होता है। स्वाभाविकता सम्प्रणता, सहृदयता और मौलिकता चरित्र–चित्रण की विशेषताएँ हैं।

3. कथोपकथन :

कथोपकथन उपन्यास का तीसरा तत्त्व है। यह कथा का विकास करता तथा पात्रों के चरित्र–चित्रण में सहायक होता है। इसके द्वारा उपन्यासकार अपनी कृति में वर्णित घटनाओं या दृश्यों में सजीवता लाता और उसके संगठन में कथानक का विस्तार करता है। कथोपकथन के प्रत्यक्षतः कथानक के सूत्र से सम्बन्धित होता चाहिए कथोपकथन के द्वारा उपन्यासकार पाठकों को अपने पात्रों के विषय में विविध जटिल परिस्थितियों का प्रत्यक्ष बोध कराता है। उपन्यासकार अपनी कृति के चरित्रों की व्याख्या करता है और उन्हें विकास की ओर अग्रसर करता है। कथोपकथन लेखक के उद्देश्य को प्रकट और स्पष्ट करता है। उपयुक्तता, अनुकूलता, सम्बद्धता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता और उद्देश्यपूर्णता आदि कथोपकथन के गुण हैं।

4. देशकाल :

इसके अंतर्गत किसी भी देश या समाज की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, आचार–विचार, रहन–सहन, रीति–रिवाज तथा समाज की कुरीतियाँ या विशेषताएँ आदि समझी जाती हैं। यह कथानक के स्पष्टीकरण का साधन है। आदमी जिस प्रकार के समाज में रहता है, वैसा ही वह काम भी करता है। प्रकृति और पात्रों की मानसिक स्थिति का सामंजस्य पाठक पर अच्छा प्रभाव डालता है और उपन्यासों में काव्यत्व भी लाता है। देशकाल प्रायः वातावरण का बाह्य रूप या प्रकार कहा जाता है। इस दृष्टि से तीन भेद किये जाते हैं। वे सामाजिक, प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक है।

प्रथम के अंतर्गत सामाजिक दशा का यथार्थ चित्रण किया जाता है। अर्थात् सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाले सभी वर्णन, वेश–भूषा, भाषा, रीति–रिवाज, शिक्षा, संस्कृति, व्यापार आदि इसके अंतर्गत आते हैं। द्वितीय अर्थात् प्राकृतिक के अंतर्गत कभी–कभी उपन्यासकार अपनी कथा के पात्रों के सुख–दुःख के साथ प्रकृति की समता–विषमता को बड़े नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करता है। तृतीय अर्थात् ऐतिहासिक की आवश्यकता प्रायः ऐतिहासिक उपन्यासों में होती हैं। इनमें देश–काल के विषय में अधिक सतर्क रहना है। यहाँ काल–दोष न होना या कोई वर्णन इतिहास–विरुद्ध भी न होना है।

5. शैली :

शैली के द्वारा उपन्यासकार अपनी कृति को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार जिस ढंग से अपने विचार और भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है, उसी को शैली कहते हैं। सरलता, रोचकता और प्रवाहपूर्णता आदि शैली के गुण हैं। शैली के पाँच प्रकार हैं। वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी और मिश्रित शैलियाँ हैं। जीवनीपरक उपन्यासों में साधारणतः वर्णनात्मक और मिश्रित शैलियों का प्रयोग होता है।

6. उद्देश्य :

उपन्यासकार अपनी कृति में किसी विशिष्ट दृष्टिकोण का सहारा लेता है और उसके आधार पर मानव–जीवन का मूल्यांकन करते हुए अपने जीवन दर्शन का स्पष्टीकरण करता है। बहुधा ऐसा प्रतीत होता है कि कथा के नायक के माध्यम से लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है तथा अन्य पात्रों द्वारा उन्हीं के खंडन–मंडन का प्रयत्न करता है। उपन्यास को केवल मनोरंजन का साधन मानना गलत है। आधुनिक युग में हर उपन्यास का एक उद्देश्य होता है जिससे मानव अपना जीवन सुधार सकता है।

सामान्य रूप से उपन्यास के छः मुख्य तत्त्व माने जाते हैं। परन्तु कुछ विद्वान इनसे अलग एक सातवाँ तत्त्व 'रस' अथवा 'भाव' भी मानते हैं। वास्तव में कोई उपन्यासकार अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार ही उपन्यास में कथावस्तु को आगे बढ़ाता है। इस सन्दर्भ में वह कहं श्रृंगार, कहीं वीर या हास्य रसों का भी प्रयोग करता है। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि यह उपन्यास अमुक रस पर आधारित है। जीवनीपरक या ऐतिहासिक उपन्यासों में वीर रस के साथ, श्रृंगार, हास्य और भयानक 'रस' का भी प्रयोग होता है। इसलिए उपन्यास में रस का होना आवश्यक है। जिस प्रकार मानव जीवन में विभिन्न भावों की आवश्यकता है, उसी प्रकार जीवनीपरक उपन्यासों में तमाम रसों का प्रयोग अनिवार्य है।

इस प्रकार जीवनीपरक उपन्यासों के अध्ययन के लिए उनके तत्त्व पर ध्यान देना हमारा कर्त्तव्य है। इनके अध्ययन में हमें साहित्यकार की सृजनात्मक योग्यता का बोध होता है। वातावरण, उद्देश्य एवं जीवन से संबंधित अनेक बातों का सहज ज्ञान होना है।

www.ignited.in